

2 समाज जागरण

साधना पथ (भाग 177)



देव मणि शुक्ल

कुंभकरन रावण है भाई।

इहाँ होते सुर मुनि दुखदाह॥ ६॥

भावार्थः-देवताओं और मुनियों को दुःख देने वाले कुंभकर्ण और रावण दोनों

भावार्थः-देवताओं और मुनियों को दुःख देने वाले कुंभकर्ण और रावण दोनों

भावार्थः-देवताओं और मुनियों को दुःख देने वाले कुंभकर्ण और रावण दोनों

यहाँ

गए॥ ६॥

दोहा :

इहाँ सेतु बांधों अरु

थोपें सिव सुख धाम।

सीता सहित कृपानिधि

संभुहि कीन्ह प्रनाम॥ ११९ क॥

भावार्थः-मैंने यहाँ पुल बांधा

(बांधवाया) और सुखधाम श्री

शिवजी की स्थापना की।

तदनन्तर कृपानिधनं श्री रामजी

ने सीताजी सहित श्री रामेश्वर

महादेव को प्रणाम किया॥ ११९

(क॥)

जहाँ जहाँ कृपासंधि बन

कीन्ह बास विश्राम।

सकल देखा, जानकिहि

कहे सबन्हि के नाम॥ ११९ ख॥

भावार्थः-वन में जहाँ-तहाँ करुणा

सागर श्री रामचंद्रजी ने निवास

और विश्राम किया था, वे सब

स्थान प्रभु ने जानकीजी को

दिखाएँ और सबके नाम

बतलाए॥ ११९ (ख॥)

चौपाईः :

तुरत विमान तहाँ चलि आवा।

दंडक बन जहाँ परम सुहावा॥

कुंभजादि मुनिनायक नाना।

गए रामु सब के अस्थान॥ १॥

भावार्थः-विमान शीघ्र ही वहाँ

चला आया, जहाँ परम सुदर

दण्डकन था और अगस्त्य

आदि बहुत से मुनिराज रहते थे।

श्री रामजी इन सबके स्थानों में

गए॥ १॥

सकल रिषिन्द सन पाह असीसा।

चिक्रूट आए जानीसा॥

तहाँ करि मुनिन्ह केर संतोषा।

चला विमान तहाँ ते चोखा॥ २॥

भावार्थः-संपूर्ण ऋषियों से

आशीर्वाद पाकर जगदीश्वर श्री

रामजी चिक्रूट आए। वहाँ

मुनियों को संतुष्ट किया। (फिर)

विमान वहाँ से आगे तेजी के

साथ चला॥ २॥

बहुरि राम जानकिहि देखाई।

जमुना कलि मल हरनि सुहाई॥

पुनि देखी सुरसी पुनीता।

राम कहा प्रनाम कर सीता॥ ३॥

भावार्थः-फिर श्री रामजी ने

जानकीजी को कलियुग के पायों

का हरण करने वाली सुहावनी

मेरा नया बचपन

बार-बार आती है मुझको मधुर याद बचपन तेरी।

गया ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी॥

चिंता-रहित खेलना-खाना वह फिरना निर्भय स्वच्छं।

कैसे भूला जा सकता है बचपन का अतुलित अनंद?

ऊँच-नीच का ज्ञान नहीं था छुआँछूत किसने जानी?

बनी हुई शी वहाँ झोपड़ी और चौथड़ों में रानी॥

किये दूध के कुल्ले मैं चूस अँगूठा सुधा पिया।

किलकारी किल्लों में चूस घर आबाद किया॥

रोना और मचल जाना भी क्या आनंद दिखाते थे।

बड़े बड़े मौती-से आँखू जयमाला पहनाते थे॥

स्वामी मुद्रक एंव प्रकाशक रमन कुमार ज्ञा द्वारा साई प्रिंटिंग प्रेस वी, 42 सेक्टर 07 नोएडा से मुद्रित कराकर नियर दुर्गा पब्लिक स्कुल श्याम लाल कालोनी बरोला सेक्टर 49 नोएडा २०१३०१ गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र. से प्रकाशित, फोन ९८९१७०६८५३

संपादकीय

नोएडा, (गौतमबुद्धनगर) रविवार 26 जून 2022

राष्ट्रीय आर्थिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक विकास की धूरी महिला सशक्तिकरण

यमुनाजी के दर्शन कराए। फिर पवित्र गंगाजी के दर्शन किए। श्री रामजी ने कहा- हे सीते! इन्हें प्रणाम करो॥ ३॥

तीरथपति पुनि देखु प्रवागा। निरखत जम्म कोटि अच भाग॥ देखु परम पवानि पुनि बेनी। हरनि सोक हरि लोक निसेन॥ ४॥

पुनि देखु अवधुपुरि अति पवानि। त्रिविध ताप भव रोग नसावन॥ ५॥

भावार्थः-फिर तीरथराज प्रवाग को देखो, जिसके दर्शन से ही करोड़ों जनों के पाप भाग जाते हैं। फिर परम पवित्र त्रिविधीजी के दर्शन करो, जो शेषों को हरने वाली और श्री हरि देखो के परम धार्म (पहुँचने) के लिए सीढ़ी के दर्शन करो। जो तीनों प्रकार के तापों और भव (आवागम रूपों) रोग का नाश करने वाली है॥ ५॥

भावार्थः-मैंने यहाँ पुल बांधा (बांधवाया) और सुखधाम श्री शिवजी की स्थापना की। तदनन्तर कृपानिधनं श्री रामजी ने सीताजी सहित श्री रामेश्वर महादेव को प्रणाम किया॥ ११९ क॥

दोहा :

इहाँ सेतु बांधों अरु

थोपें सिव सुख धाम।

सीता सहित कृपानिधि

संभुहि कीन्ह प्रनाम॥ ११९ क॥

दोहा :

सीता सहित अवध कहुँ

कीन्ह कृपाल प्रनाम।

सजल नवन तन पुलकित

पुनि पुनि हरपित राम॥ १२० क॥

भावार्थः-यों कंहकर कृपालु श्री

रामजी ने सीताजी सहित

अवधपुरी को प्रणाम किया।

सजल नेत्र और पुलकित शरीर

होकर श्री रामजी बार-बार हरपित हो रहे हैं॥ १२० (क॥)

पुनि प्रभु त्रिवेणी हांहि नीनु कृपालु कहुँ।

करपित मज्जुनु कीन्ह।

संवाद विविध विधि दीन्ह॥ १२० ख॥

भावार्थः-प्रभु त्रिवेणी में आकर

प्रभु ने हरपित होकर स्नान किया।

करपित मज्जुनु कहुँ।

संवाद विविध विधि दीन्ह॥ १२० (ख॥)

भावार्थः-प्रभु त्रिवेणी में आकर

प्रभु ने हरपित होकर स्नान किया।

करपित मज्जुनु कीन्ह।

संवाद विविध विधि दीन्ह॥ १२० (ख॥)

भावार्थः-प्रभु त्रिवेणी में आकर

प्रभु ने हरपित होकर स्नान किया।

करपित मज्जुनु कीन्ह।

संवाद विविध विधि दीन्ह॥ १२० (ख॥)

भावार्थः-प्रभु त्रिवेणी में आकर

प्रभु ने हरपित होकर स्नान किया।

करपित मज्जुनु कीन्ह।

संवाद विविध विधि दीन्ह॥ १२० (ख॥)

भावार्थः-प्रभु त्रिवेणी में आकर

प्रभु ने हरपित होकर स्नान किया।

करपित मज्जुनु कीन्ह।

संवाद विविध विधि दीन्ह॥ १२० (ख॥)

भावार्थः-प्रभु त्रिवेणी में आकर

प्रभु ने हरपित होकर स्नान किया।

करपित मज्जुनु कीन्ह।

संवाद विविध विधि दीन्ह॥ १२० (ख॥)

भावार्थः-प्रभु त्रिवेणी में आकर

प्रभु ने हरपित होकर स्नान किया।

करपित मज्जुनु कीन्ह।

संवाद विविध विधि दीन्ह॥ १२० (ख॥)

भावार्थः-प्रभु त्रिवेणी में आकर

प्रभु ने हरपित

